इस्लाम कृपा एंव दया का धर्म

लेखक

खालिद अबू सालेह

अनुवाद

जावेद अहमद

सन्शोधन

अतारुर्रहमान ज़ियाउल्लाह

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

www.islamhouse.com

1428-2007

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

सभी प्रशंसायें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं और दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिन को पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा गया, और उनकी संतान और उनके सभी साथियों पर।

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्यों भेजा गया?

क्या उन को मानवता को यातना देने के लिए भेजा गया?

क्या उन को मानवता को नष्ट करने के लिए भेजा गया?

क्या लोगों से उन के अविश्वास तथा शत्रुता का बदला लेने के लिये भेजा गया?

इन सारे प्रश्नों का उत्तर अल्लाह तआला का यह कथन दे रहा है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعَٰلَمِينَ ﴾

“तथा हम ने आप को पूरी दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है।”(सूरतुल अंबिया:१०७)

यही दूतत्व का उद्देश्य तथा अवतरण का अभिप्राय तथा नुबुव्वत का मक़सद है।

निःसन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की ओर से पथ भ्रष्ट तथा आश्चर्य चकित मानवता के लिए अनुकम्पा हैं।

अल्लाह तआला का कथन है:

﴿فَبِمَا رَحۡمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ لِنتَ لَهُمۡۖ وَلَوۡ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ ٱلۡقَلۡبِ لَٱنفَضُّواْ مِنۡ حَوۡلِكَۖ ﴾

''अल्लाह की रहमत के कारण आप उन पर नरम दिल हैं, यदि आप बद ज़ुबान और सख़्त दिल होते तो यह सब आप के पास से छट जाते।''
(सूरत आल-इम्रानः१५९**)**

यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कठोर हृदय वाले होते तो अल्लाह तआला का संदेश पहुँचाने के लिए अनुचित होते और जब हम ने आप को संदेश्वाहक बनाया तो सन्देष्टा के लिए अनिवार्य है कि वह कृपालू, दयावान, विशाल हृदय वाला, सहनशील तथा बहुत धैर्यवान और संतोषी हो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''ऐ लोगो ! मैं रहमत तथा दया बनाकर भेजा गया हूँ।'' **(**इब्ने सअद ने इस का वर्णन किया है और अल्लामा अलबानी ने इस के शवाहिद के आधार पर इसे हसन क़रार दिया है।**)**

तथा इतिहास लेखकों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताओं के विषय में लिखा है किः

- आप बीवी बच्चों के संबंध में लोगों में सब से बढ़ कर दयालू थे। **(**सहीहुल जामे**)**

- आप दयालू थे, आप के पास जो भी आता था उस से वायदा करते थे (यदि आप के पास वह चीज़ नहीं होती) और अगर वह वस्तु आप के पास होती तो आप उसे आप पूरा करते थे। (सहीहुल जामे)

कृपा का प्रलोभन

नबी सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को अल्लाह की सृष्टि के साथ कृपा व दया करने पर लोगों को उभारा है, वह छोटे हों या बड़े, नर हों या नारी, चाहे वह मुसलमान हों या नास्तिक, तथा इस संबंध में बहुत सारे तर्क वर्णित हैं:

- जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु द्वारा वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

''जो व्यक्ति लोगों के ऊपर दया नहीं करता अल्लाह उसके ऊपर दया नहीं करता।'' (बुखारी व मुस्लिम)

- तथा हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने नबी सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि :

''तुम मोमिन नहीं हो सकते यहाँ तक कि आपस में एक दूसरे के ऊपर दया व कृपा करने लगो।''

उन्हों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम में का हर व्यक्ति दयालू है।

आप सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''दया यह नहीं कि तुम में से कोई अपने साथी के साथ करे, परन्तु दया यह है कि साधारण जनता के साथ करो।'' (इसे तबरानी ने बयान किया है और अलबानी ने हसन कहा है)

यह इस बात का तर्क है कि दया सब जनता के साथ होना चाहिए, जिस को आप जानते हों तथा जिस को ना जानते हों, (सब के साथ दया करें)।

- तथा अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा द्वारा वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“दया करने वालों के ऊपर अल्लाह तआला दया करता है, धरती पर बसने वालों के ऊपर दया करो आकाश वाला तुम्हारे ऊपर दया करे गा।”
(अबू दाऊद और त्रिमिज़ी ने इसे बयान किया है और त्रिमिज़ी ने कहा है कि यह हदीस हसन-सहीह है)

आप नबी सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम के इस फरमान कि **“धरती पर बसने वालों के ऊपर दया करो”** के अर्थ में मनन चिन्तन करें तो आप इस धर्म की महानता को समझ जायें गे जो पूरी मानव जाति के लिए कृपा (रहमत) बन कर उतरा है, अतः इस धर्ती पर बसने वाले हर व्यक्ति इस्लाम धर्म में दया का पात्र है !

चाहे वह अनीश्वरवादी ही हो?

जी हाँ, चाहे वह ग़ैर मुस्लिम ही क्यों न हो!

फिर इस्लाम ने धर्म-युद्ध का आदेश क्यों दिया?

इस्लाम ने धर्म-युद्ध का आदेश अल्लाह की कृपा तथा लोगों के बीच रोड़ा बनने वाले व्यक्ति को हटाने के लिए दिया, अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ ﴾

''तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है।'' (सूरत आल इम्रानः११०)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि तुम लोगों में लोगों के लिए सब से उत्तम हो, तुम उन को बेड़ियों में इस लिए जकड़ कर लाते हो ताकि तुम उन को स्वर्ग में ले जा सको।

इस्लाम का व्देष तथा कीना कपट से कोई संबंध नहीं, जिस ने जीवन के अनेक भागों में मानवता को विनाश के घाट उतारा।

निःसन्देह कठोर हृदय जिस में कृपा व दया न हो वह सच्चे विश्वासियों (मोमिनों) के हृदय नहीं, इसी लिए नबी सल्लल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''कृपा केवल दुःशील से उठा ली जाती है।'' (इसे अबू दाऊद ने बयान किया है और अलबानी ने इसे हसन कहा है)

इस में कोई शक नहीं कि दूसरे विश्व युद्ध में ६० मिलियन जनता मारी गई, क़बरें अपने मदफूनों से तंग

हो गयीं तथा शव की बदबू संसार के कोने कोने में फैल गयी और मानवता खून तथा खोपड़ियों और शवों के टुकड़ों के समुद्र में डूब गयी तथा युद्ध नेताओं ने चाहा कि अपने शत्रुओं की टोलियों में नागरिकों की सब से बड़ी संख्या को मौत के घाट उतार दें, तथा बस्तियों को नष्ट करने, निशाने राह को मिटाने और जीवन के हर दस्तूर का सफाया करने के लिए सब से बड़ी स्म्भाविक ताक़त का प्रयोग करना चाहा !

तो यह लोग विश्व को किस प्रकार की स्वतन्त्रता दे सकते हैं?

तथा मानव जाति को कौन सी आज़ादी दिला सकते हैं?

यह युद्ध क्यों हुआ? इस के क्या कारण थे? इसके नैतिक कारण क्या थे? इसके परिणाम क्या निकले? इस में होने वाली तबाही का ज़िम्मेदार कौन है? इन सब पर किसी ने नहीं सोचा तथा इच्छाओं, कठोरता और कीना कपट को अधिकार प्राप्त रहा तथा युद्ध नेताओं को बल-शक्ति का घमंड चढ़ा रहा, अन्ततः इस भयानक विश्व-संघर्ष का परिणाम यही निकला !

आश्चर्य की बात यह है कि जिन लोगों ने इस घिनावने नर-हत्या का कांड किया वही लोग आज इस्लाम तथा

मुसलमानों पर कठोरता और सख्ती का आरोप लगाते हैं, और समझते हैं कि इस्लाम कठोरता पर उभारने वाला धर्म है तथा नष्ट, विनाश और सार्वजनिक हत्या की ओर बुलाता है!!!

परन्तु यह तो सफेद झूठ है जिस का तर्क न तो इतिहास से मिलता है और न ही मौजूदा सूरते हाल से मिलता है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ैबर के यहूदियों की ओर भेजा तो हज़रत अली ने आप से प्रश्न किया कि ऐ अल्लाह के संदेष्टा! क्या मैं उन से युद्ध करता रहूँगा यहाँ तक कि वह हमारी तरह हो जायें (मुसलमान हो जायें) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

> **‘‘इतमिनान से रवाना हो जाओ यहाँ तक कि ख़ैबर के मैदान में पहुँच जाओ फिर सब से पहले उन को इस्लाम धर्म की ओर बुलाओ और उनके ऊपर अल्लाह के जो अधिकार (हुकूक़) हैं उन को बताओ, अल्लाह की सौगंध ! यदि अल्लाह तुम्हारे ज़रिया से एक व्यक्ति को हिदायत दे दे**

तो तुम्हारे लिये यह लाल रंग के ऊँटो से बेहतर है।'' (बुख़ारी व मुस्लिम)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने एक कमांडर को यह आदेश दे रहे हैं जिस के अन्दर हत्या करने और खून बहाने की कोई बात नहीं, अपितु आप के आदेश में यह संकेत है कि इन लोगों का हिदायत पा जाना तथा सत्य (इस्लाम) को स्वीकार कर लेना उन को कुफ्र की स्थिति में मारने से बेहतर है।

और युद्ध में इस्लाम की कृपा के विषय में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''रसूलुल्लाह के धर्म पर रहते हुये अल्लाह के वास्ते अल्लाह का नाम लेकर निकल जाओ, किसी कमज़ोर बूढ़े को मत मारो और न ही किसी छोटे बच्चे को और न ही नारी को और माले ग़नीमत में ख़ियानत न करो और माले ग़नीमत समेट लो और संधि से काम लो और भलाई करो, निःसन्देह अल्लाह भलाई करने वाले को चाहता है।'' (अबू दाऊद)

आप के इस आदेश से उन लोगों का क्या संबंध है जिन्हों ने बस्तियों को नष्ट किया तथा बस्तियों में बसने वालों को तबाह किया और विश्व आधार पर वर्जित हर प्रकार के हथियारों का प्रयोग कर के औरतों, बच्चों, बूढ़ों, खेत के किसानों और गिरजाघरों के पादरियों को क़त्ल किया ?!

जिन युद्धों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नेतृत्व किया या जो युद्ध आप के युग में हुए उन में नास्तिकता के कोई सैंकड़ों नेता मारे गये जिन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट दिया था, आप के साथियों को शहीद किया था तथा इस्लाम और मुसलमानों पर हर जगह तंगियां कीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने कष्ट देते हुये तथा कारादण्ड देते हुये उन को अन्य देशों की ओर जिला वतन हो जाने तथा उनको अपने मालों और घरों को छोड़ देने पर मजबूर नहीं किया। जब कि केवल सलीबी युद्ध के अन्दर लाखों मुसलमान खत्म कर दिये गये तथा लाखों लोग अनेक प्रकार की घिनावनी यातनाओं से पीड़ित हुये।

तो तुम्हारी वह दया कहाँ है जिस के तुम दावे करते हो?

तथा आज तक इन लोगों ने इस घिनावने करतूतों से क्षमा क्यों नहीं मांगी?!

जोस्टेफ लोफन -जो कि एक बड़ा मुस्तश्रिक़ (पूर्व देशीय भाषाओं और उलूम का ज्ञान रखने वाला पश्चिमी विचारक) है- कहता है किः ''सत्य तो यह है कि लोगों ने अरबों जैसी दया व रहम करने वाले विजेता नहीं देखे, इस्लाम धर्म ने ही मुसलमानों को यह कृपा तथा दया प्रदान की, तथा हम ने अनेक युद्ध देखे हैं जैसे अफ्यून का युद्ध तथा उस से कठोर आज की स्तेमारी जंगें और इस से भी कठोर सहयूनियों की कठोरत तथा अत्याचार है, विनाशकारी तथा खून बहाने से इन सहयूनियों को लगाव है।'' (रहमतुल इस्लाम पृष्ठ १६७-१६८)

यह तो मुसलमानों की दया है और यह इन शत्रुओं की कठोरता है, तो फिर कौन से गरोह पर कठोरता, हत्या तथा आतंक का आरोप लगाया जा सकता है?!

शैख़ अब्दुर्रहमान सअ्दी कहते हैं : ''इस धर्म की कृपा, बेहतर मामलात और भलाई की दावत तथा इस के

विपरीत वस्तुओं से मनाही ने ही इस धर्म को अत्याचार, दुर्व्यवहार तथा अनादरता के अन्धकार में ज्योति तथा प्रकाश वाला बना दिया और इसी विशेषता ने कठोर शत्रुओं के हृदयों को खींच लिया यहाँ तक कि उन्हों ने इस्लाम धर्म के साये में पनाह ली और इस धर्म ने अपने मानने वालों के ऊपर दया की यहाँ तक कि रहम-क्षमा और दया (एहसान) उनके दिलों से छलक कर उनके कथन और कामों पर प्रकट होने लगे, और यह एहसान उनके शत्रुओं तक जा पहुँचा, यहाँ तक कि वह इस धर्म के महान मित्र बन गये, कुछ तो शौक़ और बेहतर सूझ-बूझ से इस के अन्दर दाखिल हो गये और कुछ इस धर्म के आगे झुक गये तथा (उन के दिलों में) इस (इस्लाम) के आदेशों में उल्लास पैदा हो गया और उन्हों ने न्याय और कृपा के आधार पर इस्लाम धर्म को अपने धर्म के आदेशों पर प्राथमिकता दी। (अद्दुर्रतुल-मुख्तसरह पृष्ठ १० -११)

बच्चों के ऊपर दया

इस्लाम के अन्दर कृपा की एक शक्ल छोटे बच्चों के ऊपर दया करना तथा उन से लाड और प्यार करना और उन को दुःख न पहुँचाना है।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसन बिन अली रज़ियललाहु अन्हुमा को चूमा और आप के पास अक्रा बिन हाबिस बैठे हुये थे, तो अक़रा ने कहा कि मेरे दस बच्चे हैं, परन्तु मैं ने उन में से किसी को नहीं चूमा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की ओर देखा और फरमाया कि:

> **''जो दया नहीं करता उस के ऊपर दया नहीं की जाती।''** (बुखारी व मुस्लिम)

तथा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है, वह फरमाती हैं कि कुछ देहाती लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और उन्हों ने आप से प्रश्न किया कि क्या आप लोग अपने बच्चों को बोसा देते हैं? तो आप ने उत्तर दिया कि हाँ, उन्हों

ने कहा कि अल्लाह की सौगन्ध है हम उन को बोसा नहीं देते हैं! ते अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

> **''अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से दया को उठा लिया तो मैं इस का मालिक नहीं।''** (बुखारी व मुस्लिम)

पस यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, यही वह व्यक्ति है, जिस के विषय में लोग मिथ्या से काम लेते हैं, तथा कहते हैं कि वह एक युद्ध कर्ता और गँवार व्यक्ति था और जो खून बहाने का अभिलाषी था, तथा वह दया करना नहीं जानता था !!

यदि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इस प्रकार के असत्य, झूठ, मिथ्यारोप तथा मनगढ़त आरोप लगाते हैं, तो यह असफल तथा नाकाम रहें !

हज़रत अबू मस्ऊद बदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि मैं अपने नौकर को कोड़े लगा रहा था कि मुझे मेरे पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी कि **''ऐ अबू मसऊद! याद रखो''**, वह कहते हैं कि क्रोध के कारण आवाज़ को पहचान न सका, पस जब वह मेरे

निकट आये तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे, और आप फरमा रहे थे किः

''अबू मसऊद याद रखो कि तुम जितनी शक्ति इस नौकर के ऊपर रखते हो, उस से अधिक शक्ति अल्लाह तुम्हारे ऊपर रखता है।''

तो मैं ने कहा कि इस के बाद मैं कभी भी किसी नौकर को नहीं मारूँ गा !

तथा एक दूसरे कथन में है कि मैं ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! यह अल्लाह की इच्छा के लिए मुक्त (आज़ाद) है, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''यदि तुम ऐसा न करते तो नरक की आग तुम को धर पकड़ती।'' (मुस्लिम)

जिन संगठनों की स्थापना बच्चों के ऊपर होने वाले अत्याचार को रोकने के लिये की गयी है, उनका उत्तरदायित्व बनता है कि वह बच्चों के अधिकार को सिद्ध करने तथा उन को दुःख न देने के विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रधानता को स्वीकार करें, तथा बच्चों पर दया करने तथा उन से प्यार और

भलाई पर उत्तेजित करने वाली इन महत्वपूर्ण अहादीस नबवी को अपने दरवाज़ों पर लटका दें।

बच्चों के ऊपर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया यह थी कि आप उनके देहान्त हो जाने पर आँसू बहाते। उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने नवासे को अपने हाथों में लिया जिस समय वह मरने के निकट थे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू निकल पड़े, तो सअद ने आप से प्रश्न किया कि ऐ अल्लाह के रसूल क्या कारण है? तो आप ने उत्तर दिया कि:

‘‘यह दया का आँसू है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के दिलों में डाल रखा है, तथा अल्लाह तआला अपने दया करने वाले बन्दों के ऊपर दया करता है।’’ (बुखारी व मुस्लिम)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने पुत्र इब्राहीम के पास गये जब उनकी मृत्यू का समय था, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू बहने लगे, तो अब्दुर्रहमान बिन औफ ने आप से प्रश्न किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आप की आँखों से आँसू निकल रहे हैं? तो आप ने उत्तर दिया कि **''ऐ औफ के पुत्र! यह दया के आँसू हैं''**, फिर आप ने फरमाया किः

''निःसन्देह आँखों से आँसू निकलते हैं, तथा हृदय दुखित है, परन्तु हम वही बात कहते हैं जिस से हमारा प्रभु प्रसन्न होता है, और ऐ इब्राहीम! हम तेरी जुदाई (देहान्त) से दुखित हैं।'' (बुखारी एंव मुस्लिम)

स्त्रियों के ऊपर दया

जहाँ तक इस्लाम में स्त्रियों के साथ दया करने की बात है, तो यह ऐसी चीज़ है कि जिस के ऊपर मुसलमान प्रतिकाल (हर समय) में गर्व करते रहे हैं, इसी से संबंधित यह वर्णन है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जंग में एक औरत को वधित पाया, तो आप ने इस चीज़ को ना पसंद किया तथा बच्चों और औरतों को क़त्ल करने से मना कर दिया। (मुस्लिम)

तथा एक दूसरे वर्णन के अन्दर है कि आप ने फरमाया कि **"इस को क़त्ल नहीं करना चाहिए था"** फिर आप ने अपने सहाबा की ओर देखा और उन में से एक को आदेश दिया कि **"खालिद बिन वलीद से जा मिलो तथा उन से कहो कि वह छोटे बच्चों, कर्मकर तथा स्त्री को क़त्ल न करें।"** (अहमद व अबू दाऊद)

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

> **"ऐ अल्लाह! मैं दो प्रकार के कमज़ोरों से अर्थात अनाथ तथा स्त्री के अधिकारों के बारे में लोगों पर तंगी करता हूँ।"**(इसे इमाम नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे हसन कहा है)

इस जगह स्त्री को कमज़ोरी से विशिष्ट करने का अर्थ है कि उस पर दया की जाये, उसके साथ सद्व्यवहार किया जाये तथा उसे दुःख न पहुँचाया जाये।

कहाँ हैं वह लोग जो इस्लाम धर्म के ऊपर हिंसा तथा स्त्री के विपरीत तमीज़ करने का आरोप लगाते हैं।

जानवरों के ऊपर दया

इस्लाम धर्म के अन्दर दया इंसानों (मानवता) से आगे जानवरों चौपायों को भी सम्मिलित है, इस्लाम ने मेहरबानी तथा दया के अन्दर जानवर का भाग सुनिश्चित किया है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''एक औरत एक बिल्ली के कारण नरक में दाखिल हुई, उस ने उसे बांध दिया, न तो उसे खिलाया और न ही उसे छोड़ा कि ज़मीन के कीड़े-मकोड़े खा सके।''

तथा एक अन्य वर्णन में है किः

''उस न उस को क़ैद कर दिया यहाँ तक कि वह मर गई, और जब से उसे क़ैद किया तो उसे खिलाया पिलाया नहीं, और न ही ज़मीन से कीड़े मकोड़े खान के लिए छोड़ा।'' (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू हूरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णन करते हैं कि आप ने फरमायाः

‘‘एक व्यक्ति एक कुँए के निकट आया और उतर कर पानी पिया, तथा कुँए के पास एक कुत्ता प्यास के कारण हाँप रहा था, तो उस व्यक्ति को दया आ गई, उस ने अपना एक मोज़ा निकाल कर उसे पानी पिलाया, तो अल्लाह ने उसके बदले उसे स्वर्ग में प्रवेश कर दिया।’’ (बुखारी व मुस्लिम)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

‘‘जो कोई व्यक्ति बिग़ैर किसी अपराध के किसी गौरैये या उस से बड़े जानवर को मारता है, तो अल्लाह तआला महा प्रलय (क़ियामत) में उस से इस के विषय में प्रश्न करे गा।’’

प्रश्न किया गया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस का अधिकार क्या है? आप ने उत्तर दिया किः

‘‘उस का हक़ यह है कि जब उसे ज़बह करे तो उसे खाये तथा उस के सर को काट कर उसे

फेंक न दे।'' (इमाम नसाई ने इस हदीस को वर्णन किया है तथा अलबानी ने इस को हसन गरदाना है।)

यह तो उस व्यक्ति का विषय है जो बिना किसी अपराध के एक गौरैये को मार डाले, तो उस व्यक्ति की हालत तथा बदला और यातना क्या होगी जो नाहक़ किसी व्यक्ति का क़त्ल करे?!

जानवरों के विषय में इस्लाम की दया यह भी है कि उस ने उसके साथ एहसान करने तथा ज़बह करते समय उस को घबराहट में न डालने का आदेश दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''अल्लाह ने हर वस्तु पर एहसान को अनिवार्य कर दिया है, पस जब तुम क़त्ल करो, तो ठीक तरीक़े से क़त्ल करो, तथा जब ज़बह करो तो ठीक तरीक़े से ज़बह करो, तथा तुम में से एक व्यक्ति को चाहिए कि अपनी छुरी तेज़ कर ले और अपने जानवर को आराम पहुँचाए।'' (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि एक व्यक्ति ने एक बकरी को लिटाया

तथा उस के सामने अपनी छुरी तेज़ करने लगा, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः

''क्या तुम इस को दो बार ज़बह करना चाहते हो, क्यों नहीं इस को लिटाने से पहले तुम ने अपनी छुरी तेज़ कर ली।'' (तबरानी और हाकिम ने इस का वर्णन किया तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

तो जानवरों के साथ दया की याचना करने वाले संगठन इन उत्तम नबवी आदर्श को क्यों नहीं अपनाते? तथा कैसे यह लोग इस्लाम की श्रेष्ठता को नकारते हैं जब कि यह धर्म इन के सामने चौदह शताब्दी से मौजूद है! तथा निरंतर यह लोग सत्य तथा असत्य के बीच अंतर नहीं करते, क्योंकि इस्लामी तरीक़े से ज़बह करने को यह लोग एक प्रकार का अत्याचार समझते हैं, तथा इस्लामी तरीक़े से ज़बह करने के ढेर सारे लाभ को नहीं जानते, जबकि इन का हाल यह है कि यह बिजली द्वारा अपने ज़बीहे (जानवर) को शाट कर देते हैं, या फिर इन के सरों पर मारते हैं, तथा उस के मरने के पश्चात उसे ज़बह करते हैं। और इस तरीक़े को जानवर के साथ दया करना समझते हैं। व्यक्ति के पास यदि कोई ईश्वरीय संदेश न हो, तो वह बिना जाने बूझे

मामलात को हल करता है तथा अपने मन से निर्णय करता है, और हर सफेद वस्तु को चरबी का एक टुकड़ा तथा हर काली वस्तु को खजूर समझता है, तथा अन्य लोगों पर गर्व करने लगता है, जो कि स्वयं एक प्रकार की कुत्सा तथा निन्दा है, परन्तु इच्छा की आँख अन्धी होती है! (अपनी इच्छा से निर्णय करने वाला अन्धा होता है)

जिस को कड़वे पन का रोग होता है, तो उसे साफ तथ मीठा पानी भी कड़वा लगता है।

तथा जानवर पर दया करने के संबंध में यह अजीब वर्णन भी बयान किया जाता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक अंसारी के बाग़ में दाखिल हुये तथा उस के अन्दर एक ऊँट था जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देख कर आवाज़ करने लगा तथा उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के पास आये और उसकी गर्दन पर अपना हाथ फेरा तो वह ऊँट चुप हो गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रश्न किया कि:

‘‘इस ऊँट का मालिक कौन है? यह ऊँट किस का है?’’

तो एक अंसारी लड़के ने उत्तर दिया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! यह ऊँट मेरा है।

तो आप ने फरमायाः

‘‘क्या इस जानवर के बारे में तुम को अल्लाह का डर नहीं कि जिस का मालिक अल्लाह ने तुम को बनाया है? क्योंकि इस ने मुझ से शिकायत की है कि तुम इस को भूखा रखते हो तथा निरंतर उस के ऊपर भारी भरकम बोझ लादते हो।’’ (अहमद तथा अबू दाऊद ने इस का वर्णन किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दया खनिज पदार्थ के साथ भी थी! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर के एक तने पर खड़े हो कर खुतबा (भाषण) देते थे, तो जब आप के लिए मिंबर बनाया गया और उस पर खड़े हो कर भाषण देने लगे, तो वह तना रो पड़ा, तथा सहाबा ने उस की आवाज़ सुनी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न उस के ऊपर

अपना हाथ रखा, यहाँ तक कि वह चुपचाप हो गया। (बुखारी)

यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया और मेहरबानी है, यह आप की भावनाएं हैं तथा आप का यह कृतज्ञ है और यह आप के बुनियादी उसूल हैं जिस की ओर आप ने लोगों को बुलाया, तो फिर क्यों इस उत्तमता को नकारते हो? तथा इस अनुपम बुज़ुर्ग हस्ती के अन्दर मानवी उच्चता को क्यों नहीं देखते?

कभी कभी आँख आने के कारण आँख सूर्य के प्रकाश का इनकार कर देती है, तथा कभी कभी बीमारी के कारण पानी का मज़ा अच्छा नहीं लगता।

* * *